3. जीवन की तीन बातें

लंका के राजा रावण परम विद्वान थे। उन्होंने तपस्या कर महान बल प्राप्त किया था। उस बल का प्रयोग उन्होंने सदा अपने स्वार्थ के लिए ही किया। इस कारण उनके शत्रु बढ़ गए। महान पंडित होते हुए वे अधर्म के रास्ते पर चलते रहे। फलतः भ्रातृ-प्रेम जाता रहा, किसी पर उनका विश्वास न रहा। अपने बल का, अपनी बुद्धि का उन्हें घमंड हो गया। उचित-अनुचित का ज्ञान नहीं रहा। वन में पड़ी सीता का हरण कर लिया। पर-स्त्री का हरण करना घोर अपराध है। अपनी पत्नी सीता को वापस लाने के लिए राम को घनघोर युद्ध करना पड़ा। युद्ध में रावण मारे गए।

राम के वाण से जब रावण पहाड़ की तरह रणक्षेत्र में गिर पड़े तो राम के मुख पर न हँसी थी और न आँखों में विजय की चमक। असत्य की हार होती आई है और हुई। अधर्म का नाश होता आया है और हुआ।

राम के छोटे भाई लक्ष्मण वहीं थे। वे राम से कुछ पूछना चाह रहे थे। तभी राम बोल उठे : 'जाओ लक्ष्मण उस पंडित के पास जो कुछ ही क्षणों में इस संसार से विदा हो जाएँगे। विदा होने से पूर्व उनसे शिक्षा प्राप्त करो। वे विज्ञानी हैं, विद्वान हैं। आज एक महान विज्ञानी से संसार शून्य होने जा रहा है।'

बड़े भाई की बात मानकर रणक्षेत्र में पड़े रावण की ओर लक्ष्मण बढ़े। निकट पहुँचकर वे उनके सिरहाने खड़े हो गए। कहा : 'महान विद्वान रावण, मैं आपका शिष्य बनने आया हूँ। मुझे शिक्षा दीजिए।'

रावण बिगड़कर बोले : 'तुम अस्त्र लेकर उपस्थित हुए हो, मेरे सिरहाने खड़े हो गए हो और तुममें नम्रता भी नहीं। तुम मेरा शिष्य बनने का अधिकारी नहीं। तुम शत्रु बन सकते हो, शिष्य नहीं बन सकते।'

लक्ष्मण ने तुरत अस्त्र त्याग दिया। सिरहाना छोड़कर वे पैरों के पास आ गए

Scanned with CamScanner

और नम्रतापूर्वक प्रणाम करते हुए कहने लगे : 'महाराज! मुझे माफ करें और विद्या-दान दें।'

अब रावण संतुष्ट होकर कहने लगे : 'प्रिय लक्ष्मण, तुम ऐसे समय में आए हो जब मैं दुनिया छोड़ रहा हूँ। यह जीवन-दीप अब बुझने ही वाला है। फिर भी ध्यानपूर्वक सुनो। मैंने बल-बुद्धि प्राप्त करके भी इससे दूसरों को कभी लाभ नहीं पहुँचाया। दूसरों को लाभ पहुँचाता, परोपकार करता, तो मेरी यह दुर्दशा न होती। मैंने दूसरी भूल यह की कि शत्रु को सदा छोटा और निर्बल समझा। शत्रु को छोटा न समझता तो मेरी यह दुर्गति नहीं होती। मुझसे तीसरी भूल यह हुई कि मैंने भाई-बंधुओं को प्यार नहीं दिया। प्यार देता तो विभीषण मेरा विरोधी नहीं बनता।'

रावण बोलते-बोलते थक गए। कुछ देर बाद फिर कहने लगे : 'जीवन में तीन इच्छाएँ थीं। एक इच्छा यह थी कि पृथ्वी और आकाशीय पिंडों के बीच आवागमन की सुविधाएँ जुटा दूँ। दूसरी इच्छा थी कि अग्नि को धुएँ से अलग कर दूँ। तीसरी इच्छा मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की थी। मेरे पास इन इच्छाओं को

Scanned with CamScanner

पूरा करने के सभी साधन थे, किन्तु मैं सदा यही सोचता रहा कि जल्दी क्या है, ये काम कल कर लूँगा। वह कल तो नहीं आया, पर मेरा काल आ गया। अतः तुम्हें शिक्षा देता हूँ कि तुम आज के काम को कल के लिए कभी न छोड़ना, अपने शत्रु को कभी छोटा न समझना और अपनी शक्ति या विद्या को परहित में सदा लगाते रहना।'

इतना कहते-कहते रावण की आँखें सदा के लिए बंद हो गईं।

• शब्दार्थ •

परम = बहुत अधिक, अत्यंत	**अस्त्र = फेंककर चलाया जानेवाला हथियार**
पंडित = शास्त्र जाननेवाला	**दुर्गति = बुरी गति, खराब हालत**
अनुचित = जो उचित न हो	**काल = मृत्यु**
विज्ञानी = वैज्ञानिक	**परहित = दूसरों की भलाई, परोपकार**

• बोधात्मक और विचारात्मक प्रश्न •

1. इस पंक्ति की व्याख्या करो।
   'कल तो नहीं आया, पर मेरा काल आ गया।'
2. रावण कौन थे? उनकी तीन इच्छाएँ क्या थीं? वे पूरी क्यों नहीं हो पाईं?
3. लक्ष्मण रावण के निकट कब और क्यों पहुँचे? उन्होंने रावण से क्या सीखा?
4. उचित-अनुचित का ज्ञान होना क्यों आवश्यक है? इस पाठ के आधार पर अपने विचार दो।

• भाषा और व्याकरण •

1. कोष्ठ में दिए शब्द के सही रूप से रिक्त स्थान की पूर्ति करो।
   (क) युद्ध में राम ..... हुए। (विजय)
   (ख) रावण महान ..... थे। (विज्ञान)
   (ग) पृथ्वी ..... पिंड है। (आकाश)
   (घ) उसकी ..... पूरी नहीं हुईं। (इच्छा)

Scanned with CamScanner

2. पढ़ो और समझो।

परम <u>विद्वान</u>	महान <u>विज्ञानी</u>	तीन <u>इच्छाएँ</u>
अपनी <u>शक्ति</u>	घोर <u>अपराध</u>	ऊँचा <u>पहाड़</u>

रेखांकित शब्द संज्ञाएँ हैं, जिनके साथ उनकी विशेषता बतानेवाले शब्द भी दिए गए हैं। **जिसकी विशेषता बताई जाय उसे <u>विशेष्य</u> कहा जाता है।** रेखांकित सभी संज्ञाएँ विशेष्य हैं।

इस पाठ से दो विशेष्य चुनकर लिखो।

3. विपरीतार्थक शब्द बताओ।

मूर्ख	**मित्र**	**अविश्वास**	**उचित**	**ज्ञान**	**जीत**	**संतुष्ट**

4. वाक्यों को सुधारकर लिखो।

(क) पराई इस्त्री का हरन करना बुरा है।

(ख) मेरे पास इन ईक्षाओं को पुरा करने के सभी साधन् थे।

5. श्रुतलेख (सही पढ़ो, सही लिखो।)

युद्ध	**शिक्षा**	**नम्रतापूर्वक**	**लक्ष्मण**	**अस्त्र**	**ज्ञानी**
प्रिय	**प्रयोग**	**पृथ्वी**	**प्रणाम**	**संतुष्ट**	**दुर्गति**

★

AY MEMORIAL LIB
nagar
emy

Scanned with CamScanner